खिलंदर साहित्य |

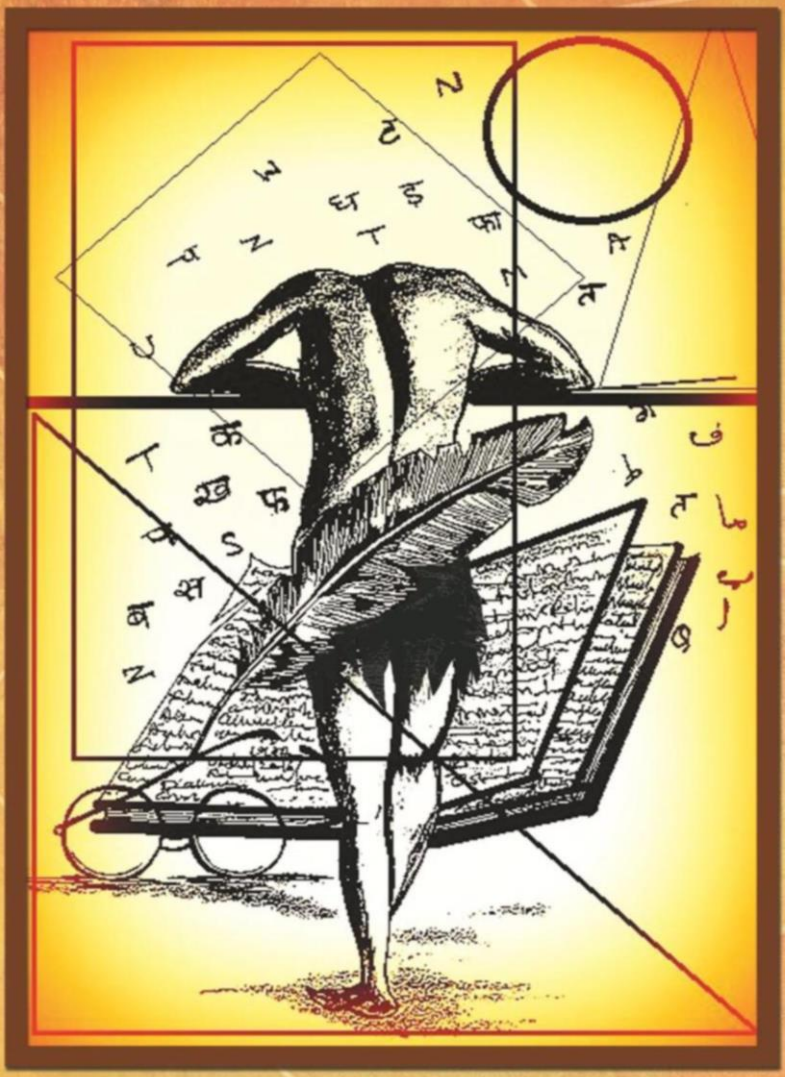

चमनलाल की डायरी

डॉ. प्रवीण झा "वामागांधी"

चमनलाल की डायरी

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN:978-93-6026-888-6

Price: ₹ 220.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher.

Printed in India

चमनलाल की डायरी

डॉ. प्रवीण कु. झा (वामागांधी)

चित्रांकन फातिमा रहमान

समर्पित है मेरे प्रथम एवं अंतिम हिंदी गुरूओं
के नाम, जिन्हें हम ''बड़े'', ''छोटे'' और
''मझले'' महाशय बुलाते थे।

आभार

इस पुस्तक के प्रेरणा स्रोत यूँ तो साक्षात् चमनलाल जी रहे जो शायद मेरे ही एक रूप हैं, जिसे अंग्रेजी में 'alter ego' कहते हैं। पर चमनलाल जी सालों से थके–सोये पड़े थे। उन्हें जगाया एक खूबसूरत देश नॉर्वे ने। जब घुमक्कड़ मन नॉर्वे ले आया, तो इस देश के विधि–निर्माताओं ने कहा कि ''नॉर्स्क'' भाषा सीखो। ''पै निज भाषा ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन''। भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी के चेले अब भारत में नहीं बसते, इन्हीं देशों में बसते हैं। हम तो लॉर्ड मैकाले के शिष्य बन गये थे। अंग्रेजी में तगमे बटोरने लगे। खैर, भाषा तो एक माध्यम है और प्रत्येक भाषा आदरणीय भी है। पर 'चमनलाल की डायरी' अंग्रेजी में शायद नहीं लिख पाता।

दूसरा आभार मेरे ब्लॉग के गिने–चुने पाठकों को, जो मुझे 'वामागांधी' नाम से जानते हैं और मन–बेमन 'लाइक', 'कमेंट' करते रहते हैं। ऐसे ही कुछ अनजाने मित्र 'खिलंदर साहित्य' फेसबुक पेज से भी जुड़े हैं।

मेरी कथाओं की उच्छृंखलता पर न जायें, मैं एक विवाहित सुखी परिवार से हूँ। साभार मेरे ग्राम–जीवन का आनंद लेते माता–पिता, मेरी सहनशील जीवन–संगिनी और दो पुत्रियाँ जो कीड़े–मकोड़े आकार में ककहरा सीख रहीं हैं।

इसी श्रृंखला में फातिमा रहमान जी, जिन्होंनें कहानियाँ पढ़ते–पढ़ते ही पेंसिल से कुछ चित्र उकेड़ दिये और 'व्हाट्स–ऐप' पर प्रेषित कर दिया। मेरी पुस्तक में जितना प्रयास मेरा है, उसी अनुपात में फातिमा जी का भी है जो आयरलैंड में बैठी हैं और कथाओं की नीरसता में प्राण डाल चुकी हैं। उनके चित्र अब 'व्हाट्स–ऐप' से निकल कर मेरी पुस्तक के मुखपृष्ठ तक पहुँच चुके हैं।

अंतिम और मुख्य आभार मेरे प्रकाशक और संपादक–मंडल का, जिन्होंने समय–सीमा में बाँध कर मुझ जैसे आलस्य–प्रेमी व्यक्तित्व से आखिर पुस्तक प्रकाशित करवा ली। मेरी कामना है कि मेरी पुस्तक उनके प्रकाशन पर बोझ न बनें। अन्यथा हिंदी प्रकाशक अब मिलते कहाँ हैं?

खिलंदर साहित्य और वामागाँधी

'खिलंदर साहित्य' साहित्य की कोई ज्ञात विधा नहीं है, और मेरी क्षमता भी नहीं कि ऐसी कोई विधा बना सकूँ। हाँ, व्यंग्य की एक शैली है जिसे मैं जीवंत मुद्दों से जोड़ने की चेष्टा करता हूँ। अब व्यंग्य ही है तो कभी कुछ आड़ा–तिरछा रास्ता लेकर क्षणिक तिरस्कार प्रतीत हो सकता है। परंतु मेरी ऐसी कोई हृदय से मंसा नहीं। कुछ भी बुरा लगे तो स्वागत है मेरे फेसबुक पेज पर दिल खोल कर बरसने हेतु। आखिर 'खिलंदर' से मेरा तात्पर्य है साहित्य का खुल कर फड़फड़ाना।

'वामागांधी' भी इसी फड़फड़ाने का प्रतिफल है। मेरा गांधी परिवार से कोई संबंध नहीं। ये मेरा 'pen-name' है जिससे मैं ब्लॉग पर लिखता हूँ। कोई वामपंथी समझता है, कोई गांधीवादी। शायद वो भी गलत न हों। कुछ प्रभाव दोनों विचारों का जीवन पर अवश्य रहा होगा। परंतु राजनीति से मेरा कोई सरोकार नहीं। न कोई चेष्टा है। न क्षमता। मेरे ब्लॉग भी व्यंग्य की बोली बोलते हैं। अंग्रेजी में भी, और हिन्दी में भी। कभी वहाँ भी अवश्य पधारिये। दूध का दूध। पानी का पानी हो जायेगा।

मेरा उर्फ चमनलाल उर्फ वामागांधी का पता है:

www.facebook.com/khilandar

www.vamagandhi.com

अनुक्रमांक

क्र.	विषय–सूचि	पेज नं.
01	सोने की पाठशाला	01
02	दक्खिन का बॉक्सर	06
03	मिक्स्ड डबल्स	14
04	चलो अमेरिका ब्रिगेड	24
05	छुटकी प्रेम कथा	33
06	आरक्षण का बंबू	40
07	सुंदरबन की सुंदरी	52
08	आत्महत्या में पी.एच.डी.	59
09	नक्सल बाबा	65
10	फेसबुक चौपाल	72
11	पेशंट दादा	78
12	मयूरी डॉट कॉम	85
13	अक्खड़ भूटानी	91
14	हैरी बोल	95
15	गुंजी का ठाकुर	99
16	मैंगो राजा	103
17	कल्यान का माफिया	107
18	मिलिट्री वाली बहू	113
19	कोड़ा वंश	118
20	पंजाब मेल	121

दो टूकः चमनलाल जी से माफीनामा

चमनलाल जी अब डायरी नहीं लिखते, ''फेसबुक' पर 'स्टैटस अपडेट' कर दिया करते हैं। कभी 'फीलिंग ब्लेस्ड' तो कभी 'फीलिंग अनहैप्पी'। पर वो दौर भी था, जब चमनलाल अपनी वो डायरी निकालते जो चंदू मामा की शादी में ससुराल से आयी थी। पहले 'श्री गणेश' लिखकर उसके नीचे लहरदार रेखायें। एक लाल, एक हरी। और फिर अपने मन की बात जो खत्म ही न होती। तब तक लिखते जब तक या तो माँ चिल्लाकर अचार के डब्बे छत पर रखने न बोलती, या पड़ोस की पिंकी स्कूल से वापस न आ जाती। वक्त बदला, दौर बदला पर चमनलाल जी की डायरी न बदली। बिहार के गाँव और कागजी शहरों से उठकर कभी दिल्ली, कभी पूना, कभी बैंगलूर तो कभी अमरीका, कभी इश्क, कभी धरना, कभी शराब–खोरी, कभी मंदिर।

सब लिख डाला। जो देखा वो भी। जो न देखा वो भी।

उनकी डायरी पढ़ता हूँ, तो दक्खिन से उत्तर, पूरब से पच्छिम जैसे कोने–कोने से मिट्टी का पुलिंदा बना दिया। कभी आरक्षण–विरोधी धरने में बैठकर पाला बदल लेते हैं, इश्क कर बैठते हैं, तो कभी समलैंगिक दुनिया में चक्कर लगा आते हैं। राम–राम।

राम तो नहीं कृष्ण–भक्ति में भी धक्के खाते हैं। धक्के भी और वाकई मुक्के भी और वो भी महान मुक्केबाज से। हद है।

कभी अमरीका का तिलिस्म तो कभी मराठवाड़ा का सूखा। कभी सुंदरबन के आदमखोर बाघ तो कभी पंजाब के लहलहाते खेत। ये डायरी नहीं सफरनामा है। पंख लगा के उड़ते हैं चमनलाल जी। पर जैसे हर कहानी सबसे जुड़ी हो, मुझसे। आपसे।

माफी चाहता हूँ चमनलाल जी। आपकी डायरी चुरा ली।

दरअसल चमनलाल जी तो एक काल्पनिक कथानायक हैं, जिनके इर्द–गिर्द मेरी कहानियाँ घूमती है। पर माफी मैं उन राजनैतिक व अन्य मुद्दों से जुड़े काल्पनिक पात्रों से भी लेना चाहता हूँ जो किसी वास्तविक व्यक्ति से मिलते–जुलते हैं। कथा को कथा ही रहने दें, और व्यंग्य को व्यंग्य। प्लीज!

चमनलालजी से कभी मिलें तो मेरा माफीनामा आप भी पहुँचवा दें। चमनलाल जी का पता है:

www.facebook.com/khilandar

श्री गणेश

अध्याय 01

सोने की पाठशाला

चंदू मामा उन मामाओं में से थे, जो रिश्ते में तो मामा होते हैं पर उम्र में समवयस्क। ऐसे मामा उन दिनों के बड़े संयुक्त परिवारों में पाए जाते, जब 'हम दो हमारे दो' के नारे नहीं लगे थे। इन मामाओं पर बचपन से ही बहुत जिम्मेदारी होती। नाक बह रही होती, पर मामागिरी में सीना तना होता। चॉकलेट पे झपट्टा नहीं मारते, भांजों को लेने देते। कभी नानी से पैसे मिलते तो लमनचूस फ्लेवर आईसक्रीम खरीद कर भांजों को देते। जब से बंगाली मुहल्ले की छम्मक–छल्लो बुबली के पीछे पड़ा, चंदू मामा कभी बुबली को आँख उठा के भी नहीं देखते। होने वाली बहू से ससुर नजरें कैसे मिलाए?

पढ़ाई में औसतन ही रहे, इसलिए चंदू मामा को नौकरी की तलाश में दिल्ली आना पड़ा। दिल्ली में सबका कुछ न कुछ जुगाड़ लग ही जाता है। एक दिल्ली मे, दूजा अमरीका में, हर कोई तरक्की कर ही लेता है।

बिहार में पहली श्रेणी वाले विज्ञान, दूसरी श्रेणी वाले आर्ट्स, और तीसरी श्रेणी वाले कॉमर्स पढ़ते। बम्बई में उल्टा था। तभी बिहार पिछड़ गया, बम्बई तरक्की कर गया। चंदू मामा बिहार के कॉमर्स ग्रेजुएट लक्ष्मीनगर में सी.ए की तैयारी में लग गए। उन दिनों सी.ए एक ऐसी पढ़ाई थी, जो साल–दर–साल चलती रहती। अंडर–वर्ल्ड वाला हिसाब था। जो एक बार अंदर जाता, बाहर नहीं निकल पाता। चंदू मामा भी अटके रह गये। जब परिवार का बोझ आया, किसी छोटी कंपनी में बही–खाता संभालने की नौकरी कर ली। टैली–शैली तो सीख ही ली थी।

चमनलाल की डायरी

चमनलाल जी का सफर यूँ तो हास्य–व्यंग्य की शैली में ढला है, परंतु इनकी 20 कथायें देश के भिन्न–भिन्न जीवंत मुद्दों पर आधारित हैं। समलैंगिकता, आरक्षण, नारी सशक्तिकरण जैसे मुद्दों पर आधारित व्यंग्य से कुछ रोजमर्रा जीवन की समस्याओं पर चुटीले व्यंग्य। कुछ बाड़मेड़, कुछ खंडवा, कुछ बिहार, कुछ दक्खिन, कुछ दिल्ली, कुछ बिदेस। मिला–जुला के एक मजेदार 'फन–राइड' है चमनलाल की डायरी।

लेखक के बारे में

डॉ. प्रवीण कु. झा "वामागांधी" लोकप्रिय व्यंग्य–ब्लॉगर हैं। भारतीय ग्राम जीवन से देश–विदेश का भ्रमणकारी जीवन और हर चौपाल पे गप्प–तरंग और लेखन ही इनका अनुभव है। डॉ. झा आजकल शीत–प्रदेश नॉर्वे (यूरोप) स्थित सुपरस्पेशलिस्ट चिकित्सक हैं, और यह लेखक की प्रथम हिंदी पुस्तक है।

लेखक से संपर्क हेतु :
doctorjha@gmail.com
www.vamagandhi.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE

ISBN 978-93-6026-888-6
9 789360 268886